साँपों का अद्भुत संसार

इनसे डरें नहीं, इन्हें समझें!

The NATURE VOLUNTEERS
An Informal Pressure Group of Environmentally Restless People

The Nature Volunteers®, Indore

यह पुस्तिका दक्षिण भारत की इरुला जनजाति को समर्पित है। इस जनजाति के लोग पारंपरिक तौर पर सपेरे थे। इन्होंने सर्प-विशेषज्ञ पद्मश्री रोम्युलस व्हिटेकर की प्रेरणा से अपने साँप पकड़ने के पुश्तैनी हुनर का उपयोग साँपों से विष निकालकर सर्पदंश के एकमात्र इलाज 'एंटी-वेनम' का उत्पादन कर उसे एक सकारात्मक व जन-कल्याणकारी मोड़ दिया और साँपों के उत्पीड़न की क्रूर परंपरा को तिलांजलि दे दी।

इनके योगदान के लिए इस जनजाति के वाडिवेल गोपाल व मासी सदैयन को जनवरी 2023 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

यह पुस्तिका क्यों?

जिस प्राणी के विषय में सबसे ज़्यादा मिथक, भ्रांतियाँ और अंधविश्वास प्रचलित हैं तो वह निस्संदेह साँप ही है। इसी के चलते इन्हें अकारण ही मारा जाता है। जीव-दया और जैव-विविधता दोनों ही दृष्टियों से यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

हमारे समाज में इनके प्रति वैज्ञानिक जानकारियों और जागरूकता का प्रसार होना अति आवश्यक है। साँपों पर अंग्रेज़ी में तो कई पुस्तकें उपलब्ध हैं पर हिंदी भाषा में इस प्रकार की पुस्तकों का चिंताजनक आभाव है। हम यह आशा करते हैं कि प्रस्तुत पुस्तिका में वर्णित वैज्ञानिक तथ्य एवं जानकारियाँ समाज में साँपों के प्रति फैले अंधविश्वासों, मिथकों एवं भ्रांतियों का निवारण करने में सहायक सिद्ध होंगी।

अस्वीकरण

जगह की सीमाओं को देखते हुए इस पुस्तिका में केवल साँपों की बुनियादी जानकारियाँ ही दी जा रही हैं।

इस पुस्तिका में प्रयुक्त फ़ोटो केवल समझाने हेतु हैं।

मार्गदर्शन: पद्मश्री भालू मोंढे, इंदौर

आकल्पन: अभिलाष खांडेकर, भोपाल

संपादन: अभ्युदय केलकर, भोपाल

लेखन: ओमप्रसाद सोहनी, भोपाल
snakes.of.mp@gmail.com
9893098483

अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय	पृष्ठ सं.
--	आइए साँपों को बचाएँ!	03
--	प्रस्तावना	04
01.	कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ	05
02.	उत्पत्ति, उद्विकास और विस्तार	06
03.	वर्गीकरण	07
04.	भारत में पाई जाने वाली प्रमुख प्रजातियाँ	08
05.	शरीर संरचना, व्यवहार व आहार	12
06.	महत्त्व	14
07.	साँप निकलने की स्थिति में सावधानियाँ	15
08.	सर्पदंश की स्थिति में उपाय	15
09.	मिथक, भ्रांतियाँ और अंधविश्वास	16
10.	साँपों पर हो रहे अत्याचार	17
11.	संरक्षण के कुछ उल्लेखनीय प्रयास	17
12.	संरक्षण में योगदान कैसे दें?	18
--	संदर्भ-स्रोत	18

फ़ोटो आभार

मुखपृष्ठ – डॉ. आनंद टायटस और गीता एन परेरा

अन्य फ़ोटो – विवेक शर्मा, ओमप्रसाद सोहनी, उमेश रमेश बारभाई, राजीव गोप और गुरुराज सनिल

आइए साँपों को बचाएँ!

'द नेचर वॉलंटीयर्ज़' मध्य प्रदेश की एक अग्रणी संस्था है जो पर्यावरण के क्षेत्र में पिछले 31 वर्षों से लगातार एकनिष्ठ होकर कार्य कर रही है। हमारे सभी अवैतनिक कार्यकर्ता पर्यावरण संरक्षण में जुटे हैं और विविध क्षेत्रों में कार्यरत हैं। उद्देश्य एक ही है – कल की हमारी दुनिया आज से अधिक हरी-भरी हो, हमारे हवा व पानी शुद्ध हों, मिट्टी और पेड़-पौधे सुरक्षित रहें तथा वन्यजीवों को मनुष्य जाति से ख़तरा कम से कम हो।

मनुष्य जाति के लिए साँपों की दुनिया काफ़ी रोमांचक रही है। किन्तु हमारे समाज में, जो तेज़ी से बहुआयामी प्रगति करता नज़र आ रहा है, साँपों के बारे में काफ़ी अज्ञान अभी भी व्याप्त है।

'द नेचर वॉलंटीयर्ज़' संस्था ने पिछले कुछ महीनों में हिन्दी में सुलेज पानी (ग्रे-वॉटर), शहरी जैव-विविधता और मधुमक्खियों पर छोटी-छोटी तीन पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया है। उसी 'पर्यावरण जागरण श्रृंखला' का यह चौथा पुष्प है जिसे आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। हम चाहते हैं कि समाज में इसके ज़रिए बहुप्रतीक्षित चेतना जागे और सहानुभूति पैदा हो जिससे इन सरीसृपों को बचाया जा सके। यह भी निश्चित है कि हमें वे सभी सावधानियाँ बरतनी चाहिए जिससे सर्पदंश से मौतें कम से कम हों। ग्रामीण अंचलों में यह समस्या अधिक विकराल है।

एक तरफ हम पढ़ते हैं कि बाघों और तेंदुओं के हमलों से कई लोग मारे जाते हैं किन्तु सर्पदंश से कहीं अधिक मौतें होती हैं। उन असामयिक मौतों को कम करने का ही हेतु है इस पुस्तिका के प्रकाशन का। आशा है हमें इसमें सफलता मिलेगी।

अभिलाष खांडेकर
सह-संस्थापक व उपाध्यक्ष
द नेचर वॉलंटीयर्ज़
इंदौर
kabhilash59@gmail.com

प्रस्तावना

'साँप' शब्द सुनते ही हमारे मन में भय और रोमांच का संचार हो जाता है। हिंदी कहावत 'साँप सूँघ गया' इसी भय-रोमांच की व्याख्या है। अपने विशिष्ट लक्षणों के कारण साँप सदियों से मानव जाति के लिए रहस्य और कौतुहल का विषय रहा है। विश्व के विविध समाजों में साँपों को लेकर कई सदियों से कई विचित्र धारणाएँ प्रचलित रही हैं। हिंदू पौराणिक ग्रंथ साँपों की कहानियों और उनके महात्म्य से भरे पड़े हैं। नाग को तो हिंदू शास्त्रों में देवता माना जाता रहा है। इसके उलट वर्त्तमान मानव समाज में साँपों की छवि सिर्फ़ एक ख़तरनाक, विषैले और जानलेवा प्राणी की है। इसका ज्वलंत उदहारण हैं हिंदी भाषा में साँपों से संबंधित मुहावरे और कहावतें, जो सभी नकारात्मक हैं, जैसे 'आस्तीन का साँप', आदि। यह भय और श्रद्धा का विरोधाभासी मिश्रण सदियों पुरानी किंवदंतियों व कपोल-कल्पित कहानियों-कविताओं की देन है, जिन्हें चलचित्रों के माध्यम से भी बढ़ावा मिला।

जहाँ भारत में प्रतिवर्ष 64,000 से भी अधिक लोग साँप के काटने से मर जाते हैं [1], वहीं भारत में प्रतिवर्ष लाखों साँप बेमौत मारे जाते हैं, कुछ डर के कारण और कुछ अंधविश्वासों के कारण। समूचे विश्व को शांति, अहिंसा और जीव-दया का उपदेश देनेवाले भारत में इन मूक जीवों के प्रति ऐसी निष्ठुरता सचमुच एक विडंबना है।

इन सबके विपरीत विज्ञान कहता है कि साँप करोड़ों वर्षों के उद्विकास (Evolution) के बाद छिपकलियों से विकसित हुए हैं। इस प्रक्रिया में साँप अलग-अलग पर्यावासों में ढलते चले गए और अपने विशिष्ट आहार-विहार के माध्यम से पारिस्थितिकी-तंत्र (ईकोसिस्टम) का अभिन्न अंग बन गए। प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में साँपों की अपरिहार्य भूमिका है। इसके आर्थिक लाभों से हमारे किसान भाई भली-भाँति परिचित हैं, क्योंकि चूहों को खाकर साँप लाखों टन खाद्यान्न बर्बाद होने से बचा लेते हैं, जिसके कारण इन्हें 'किसानों का मित्र' कहा जाता है। साँपों की विलुप्ति से खाद्यान्न संकट की स्थिति में मानव अस्तित्त्व पर किस प्रकार का ख़तरा आ सकता है इसका आप अनुमान लगा सकते हैं।

सभी जीवों की तरह ही साँप भी प्रकृति की संतान हैं। इसी नाते वे हमारे भाई-बंधु हुए। यदि उन्हें पर्याप्त पर्यावास मिले, उनके साथ अनावश्यक छेड़-छाड़ न की जाए और अपनी ओर से थोड़ी सावधानी बरती जाए तो साँप और मनुष्य उसी सहजता से मिलजुलकर रह सकते हैं जैसे प्रकृति में सभी जीव रहते हैं। आपसी संघर्ष को टाला जाता है।

सिर्फ़ मुट्ठी भर लोग ही इन सरीसृपों के संरक्षण के लिए कार्यरत हैं। देर होने से पहले प्रयासों की गति बढ़ानी होगी। साँपों से डरने की जगह उन्हें ठीक से समझना होगा। इसी जीव-दया और संरक्षण के संदेश के साथ साँपों पर यह पुस्तिका आपके समक्ष प्रस्तुत है।

1. कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

- जीव-विज्ञान की साँपों सहित सभी सरीसृपों (रेप्टाइल) और उभयचरों (एम्फीबियन) से संबंधित शाखा को हर्पेटोलॉजी (Herpetology) और इस शाखा के विशेषज्ञ को हर्पेटोलॉजिस्ट (Herpetologist) कहते हैं।
- विश्व में साँपों की लगभग 4,000 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें से केवल क़रीब 600 में विष पाया जाता है और केवल क़रीब 200 ही मनुष्यों के लिए घातक हैं।[2]
- साँप के बच्चे बचपन से ही काटना या डंक मारना नहीं जानते बल्कि धीरे-धीरे सीखते हैं। इसी प्रकार विषैले साँपों के बच्चे भी अपने विष निष्कासन पर नियंत्रण करना धीरे-धीरे सीखते हैं कि कितना काटने पर कितना विष निकालना है।
- केवल स्तनपाई जीव ही दूध पी सकते हैं। साँप चूँकि स्तनपाई न होकर एक सरीसृप (रेप्टाइल) है, यह दूध पी ही नहीं सकता। समाज में यह धारणा ग़लती से, अशिक्षा से पनपती चली गई।
- सभी साँप, चाहे विषैले हों या विषहीन, चूहे खाते हैं। भारत में 240 करोड़ चूहे हैं।[3] यदि साँप न हो, तो चूहों की संख्या अनियंत्रित रूप से बढ़ेगी और इसके हम सभी को कई प्रकार के नुकसान होंगे।
- साँप सहित सभी सरीसृप (रेप्टाइल) अपनी पुरानी खाल छोड़ते हैं।[4]
- मनुष्य साँप का प्राकृतिक आहार नहीं है। इसीलिए साँप मनुष्य पर तभी हमला करता है जब उसे ख़तरा महसूस होता है।
- सभी साँप अंडे नहीं देते। अजगर, वाइपर, इत्यादि कुछ साँप बगैर अंडे दिए सीधा बच्चों को ही जन्म देते हैं।
- हालाँकि फन फैलाने वाले साँपों को 'कोबरा' कहा जाता है, पर केवल 'नाजा' वंश के साँपों को 'विशुद्ध कोबरा (ट्रू कोबरा)' कहा जाता है। 'नाजा' नाम स्वयं संस्कृत के शब्द 'नाग' से उपजा है।
- 'विश्व सर्प दिवस' प्रतिवर्ष 16 जुलाई को मनाया जाता है।
- विश्व में सर्वाधिक सर्पदंश से मौतें भारत में होती हैं। यहाँ प्रतिवर्ष 64,000 से भी अधिक लोग साँपों के काटने से जान गँवा देते हैं।[1]

2. उत्पत्ति, उद्विकास और विस्तार

करोड़ों वर्षों के उद्विकास (Evolution) के बाद साँप चार पैरों वाली छिपकलियों से विकसित हुए हैं। [5, 6]

चूँकि साँप की हड्डियाँ कई जीवों से अपेक्षाकृत नाज़ुक होती हैं उनके अतिप्राचीन जीवाश्म उपलब्ध नहीं हैं।[5]

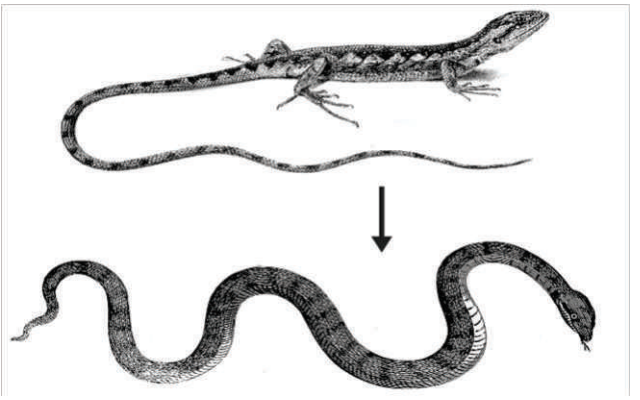

साँपों के सबसे पुराने उपलब्ध जीवाश्म क्रेटेशियास काल (Cretaceous Period) से हैं, अर्थात अब से कुछ 6.6 से 14.4 करोड़ वर्ष पूर्व।

साँपों और छिपकलियों की शरीर संरचना के तुलनात्मक अध्ययन से वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि साँप तैरने वाली अथवा खोदने वाली छिपकलियों से विकसित हुए हैं।[5, 6]

इतने लंबे उद्विकास (evolution) के क्रम में साँप वर्षा-वनों से लेकर रेगिस्तानों, यहाँ तक कि समुद्रों के भी पारिस्थितकी तंत्र (ईकोसिस्टम) में ढल चुके हैं।

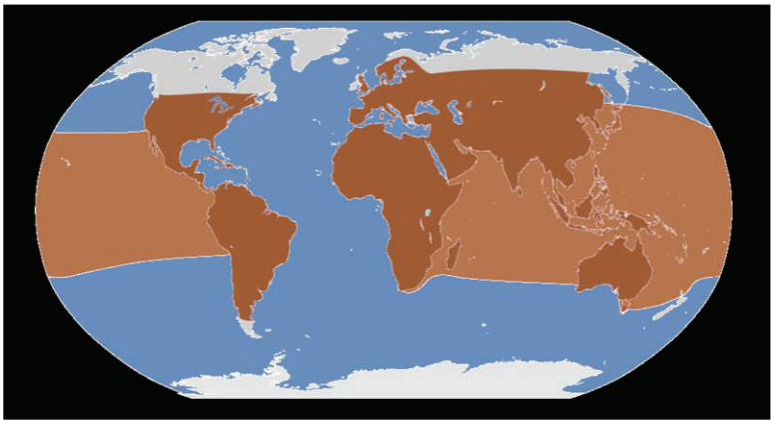

ध्रुवीय वृत्तों व उनके निकटवर्ती क्षेत्रों और आयरलैंड व न्यू ज़ीलैंड जैसे गिने-चुने देशों को छोड़कर साँप सभी देशों में पाए जाते हैं।[2]

साँपों का विस्तार

ज़मीनी साँप (भूरे रंग में) *अंटार्कटिका को छोड़कर सभी महाद्वीपों पर पाए जाते हैं।*

समुद्री साँप (हल्के भूरे रंग में) *हिंद और प्रशांत महासागरों में पाए जाते हैं।*

3. वर्गीकरण और प्रजातियाँ

जगत (Kingdom)	प्राणी (Animalia)
संघ (Phylum)	राज्जुकी (Chordata), अर्थात रीढ़ वाले जीव
उप-संघ (Sub-phylum)	कशेरुक (Vertebrata), अर्थात रीढ़ की हड्डी वाले जीव
वर्ग (Class)	सरीसृप (Reptilia); इसमें कछुए, मगरमच्छ, इत्यादि भी आते हैं
गण (Order)	(Squamata); इसमें छिपकलियाँ और साँप आते हैं
उपगण (Sub-order)	साँप (Serpentes)
कुल (Family)	साँपों के 30 अलग-अलग कुल हैं, जैसे पाइथन कुल(बड़े अजगर), वाइपर कुल, एलेपिड कुल (इस कुल में नाग/कोबरा, करेंत, घोड़ा-पछाड़, इत्यादि कई साँप आते हैं)[7]

एक कुल (family) में कई वंशों (Genus/बहु. Genera) होते हैं और प्रत्येक वंश में कई प्रजातियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए, बाघ बिड़ाल (बिल्ली) कुल के 'पैंथेरा' वंश की एक प्रजाति है, जिसका वैज्ञानिक नाम है 'पैंथेरा टाइग्रिस' (*Panthera tigris*)।

दुनिया में साँपों के 30 कुलों के 531 वंशों में लगभग 4,000 प्रजातियाँ हैं।[2, 7] हालाँकि इनके वंशों और प्रजातियों की संख्या को लेकर विशेषज्ञों के बीच कुछ मतभेद हैं।

सबसे छोटा साँप –
बारबेडोस थ्रेड स्नेक
(Tetracheilostoma carlae)
लंबाई – 10 सेंटीमीटर
वज़न – 1 ग्राम से भी कम [8]

सबसे लंबा साँप –
रेटिकुलेटेड पायथन
(Malayopython reticulatus)
अधिकतम लंबाई: 33 फीट [9]

सबसे भारी साँप –
ग्रीन एनाकोंडा
(Eunectes murinus)
अधिकतम वज़न: 227 किलो [9]

किंग कोबरा (Ophiophagus hannah) भारत का राष्ट्रीय सरीसृप है। यह दक्षिण, पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत और समूचे दक्षिण-पूर्वी एशिया में पाया जाता है। यह विश्व का सबसे लंबा विषैला साँप है। इसमें न्यूरो-टॉक्सिक विष होता है। इसका मुख्य भोजन अन्य प्रजाति के साँप होते हैं, विशेषतः घोड़ा-पछाड़। आज यह एक संकटग्रस्त प्रजाति है।[10]

4. भारत में पाई जाने वाली प्रमुख प्रजातियाँ

इस पृष्ठ पर दिखाई गईं चार प्रजातियाँ भारत में सर्वाधिक मौतों की ज़िम्मेदार हैं। इसीलिए इन्हें 'घातक चार' या 'बिग फोर' कहा जाता है।

	भारतीय एनकधारी नाग **Indian Spectacled Cobra (Naja naja)** **विष का प्रकार: Neurotoxic (न्यूरोटॉक्सिक)** **आवास:** खेत, खलिहान, अर्द्ध-विकसित हरित क्षेत्र, झुरमुटी झाड़ियाँ, कच्चे मकान, मलबा, शहरों में छिपने योग्य स्थान एवं शिकार संभावित क्षेत्र, इत्यादि।
	रसेल्स वाइपर/ दबोईया/ गोणस/ पर्रान **Russell's Viper (Daboia russelii)** **विष का प्रकार: Hemotoxic (हेमोटॉक्सिक)** **आवास:** सूखे झाड़ीदार मैदानी क्षेत्र, खेत-खलिहान, अर्द्ध-विकसित क्षेत्र, कच्चे मकान, मलबा, शहरों में छिपने योग्य स्थान एवं शिकार संभावित क्षेत्र, इत्यादि।
	फुर्सा **Saw-scaled Viper(Echis carinatus)** **विष का प्रकार: Hemotoxic(हेमोटॉक्सिक)** **आवास:** सूखे झाड़ीदार मैदानी क्षेत्र, मरुभूमि, सूखे दोमट मिटटी युक्त स्थान, सूखी झाड़ियाँ, शहरों में छिपने योग्य एवं शिकार संभावित क्षेत्र, इत्यादि।
	सामान्य करैत **Common Krait(Bungarus caeruleus)** **विष का प्रकार: Neurotoxic(न्यूरोटॉक्सिक)** **निशाचर प्रजाति; आवास:** खेत-खलिहान, अर्द्ध-विकसित क्षेत्र, झाड़ी-झुरमुट, बाग़-बगीचे, कच्चे मकान, मलबा, जल स्रोत के आस-पास, शहरों में छिपने योग्य एवं शिकार संभावित क्षेत्र, इत्यादि।

कुछ अन्य अति विषैले साँप

अहिराज/ बैंडेड क्रेट
Banded Krait (Bungarus fasciatus)
विष का प्रकार: Neurotoxic (न्यूरोटॉक्सिक)
यह सामान्य करैत से संबंधित विषैला किंतु शांत प्रवृत्ति का निशाचर साँप है।

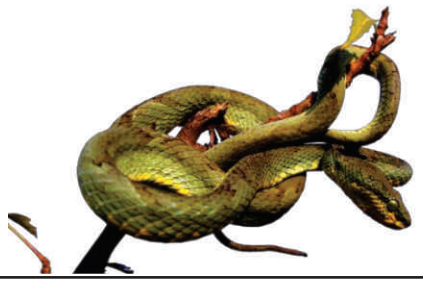

बैम्बू पिट वाईपर
Bamboo Pit Viper (Trimeresurus stejnegeri)
विष का प्रकार: Hemotoxic (हेमोटॉक्सिक)
आवास: अधिकतर हरित क्षेत्र और छोटे हरे झाड़ीदार पेड़। शिकार को तलाशने के लिए, उसकी ऊष्मा भाँपने के लिए इसके नथुने पर दो छिद्र (Pits) होते हैं।

स्लेंडर कोरल स्नेक
Slender Coral Snake (Calliophis melanurus)
विष का प्रकार: Neurotoxic (न्यूरोटॉक्सिक)
आवास: आद्र क्षेत्र, सड़ती पत्तियों के ढेर, सड़ते वृक्षों की छाल एवं कोटर व नम चट्टानी दरारें।

कुछ अर्द्ध-विषैले साँप

सुआपंखी साँप
Green Vine Snake (Ahaetulla nasuta)
आवास: घने वन। यह वृक्षों एवं घनी झाड़ियों में एक टहनी की भांति स्थिर रहकर अपने शिकार की खोज करता है।

सामान्य बिल्ली साँप
Common Cat Snake (Boiga trigonata)
आवास: सूखे झाड़ीदार मैदानी क्षेत्र, घने वन क्षेत्र, आदि। यह एक निशाचर सर्प प्रजाति है।

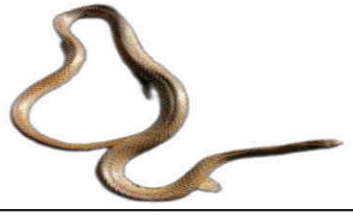

स्टाउट सैंड स्नेक
Stout Sand Snake (Psammophis longifrons)
आवास: सूखे मैदानी क्षेत्र।

कुछ विषहीन साँप

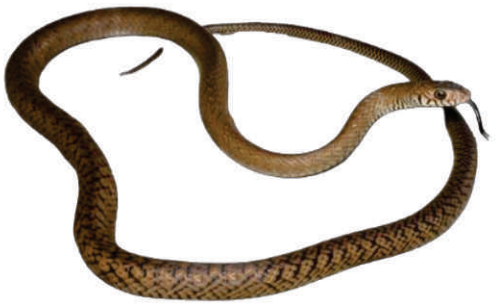

घोड़ा-पछाड़/ धामिन/ धामन

Oriental Rat Snake (Ptyas mucosa)

यह भारत में पाया जाने वाला अत्यंत सामान्य साँप है। इसे गाँवों, अर्ध-शहरी, शहरी, घने वन क्षेत्रों में आसानी से देखा जा सकता है। यह मानव बस्तियों के निकट भी चूहों की तलाश में मिल जाता है। इसकी लम्बाई 7-9 फीट तक हो सकती है। यह एक चपल और फुर्तीला साँप है और अपने शिकार की तलाश में बड़े वृक्षों पर भी आसानी से चढ़ जाता है।

पानी का साँप/ देंडू

Checkered Keelback (Fowlea piscator)

यह अक्सर जलस्रोतों के आसपास पाया जाता है। यह 24 घंटे सक्रिय रहता है। वैसे तो यह विषहीन साँप है पर यह बेहद अक्रामक होता है।

सीता की लट/ हुर्वा

Buff Striped Keelback (Amphiesma stolatum)

यह वर्षाकाल में मिलने वाला सामान्य साँप है। वर्षा ऋतु इनका प्रजनन काल होता है, जब यह काफ़ी तादाद में दिखाई देते हैं। इसे इसकी हरी रंगत एवं इसके शरीर की दोनों ओर समानांतर पीली रेखाओं से आसानी से पहचाना जा सकता है।

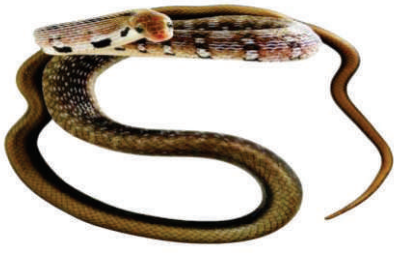

अलंकृत साँप/ वन सुंदरी

Trinket Snake (Coelognathus helena)

वैसे तो यह पानी का साँप नहीं है पर यह किसी जलस्रोत के निकट रहना पसंद करता है। छेड़े जाने पर यह अंग्रेजी के “S” आकार की अक्रामक मुद्रा बना लेता है।

संखारा साँप

Common Wolf Snake (Lycodon capucinus)

यह एक निशाचर प्रजाति का सामान्य साँप है। करैत जैसा दिखाई देने के कारण इस विषहीन और हानिरहित साँप को अक्सर मार दिया जाता है।

कुछ विषहीन साँप

कुकरी साँप

Common Kukri Snake (Oligodon arnensis)

यह साँप संकटग्रस्त प्रजातियों में शामिल है। यह एक निशाचर साँप है। यह पुराने खंडहरनुमा कच्चे मकानों, तथा सीलन वाली नम जगहों पर पाया जाता है।

धूल नागिन

Banded Racer (Argyrogena fasciolata)

यह अत्यंत सरल प्रकृति का साँप है। यह अक्सर सूखे स्थानों पर रहना पसंद करता है। वैसे तो यह एक सामान्य साँप है पर इसका दिखाई देना मुश्किल है।

दोमुँहा साँप/ माटी की दिगड़

Common Sand Boa (Eryx conicus)

यह अत्यंत सरल प्रकृति का साँप है। यह सूखी रेतीली और दोमट मिट्टी तथा सूखे मैदानी क्षेत्रों में रहना पसंद करता है। इसकी पूँछ मुँह के समान प्रतीत होने के कारण इसे दोमुँहा साँप भी कहा जाता है ।

दोमुँहा साँप

Red Sand Boa (Eryx johnii)

यह अत्यंत सरल प्रकृति का साँप है। यह सूखी रेतीली और पथरीली ज़मीन में रहता है। इसकी भी पूँछ मुँह के समान प्रतीत होने के कारण इसे दोमुँहा साँप कहा जाता है।

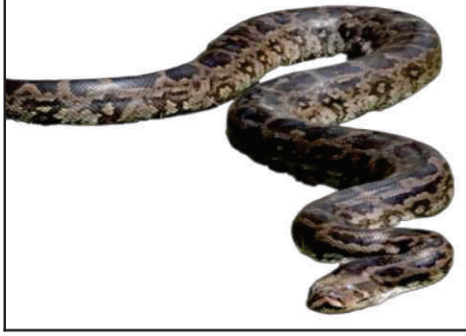

भारतीय पहाड़ी अजगर

Indian Rock Python (Python molurus)

यह बड़े आकार का साँप औसतन 10 फीट तक लंबा और 60 किलो तक भारी हो सकता है। इस साँप में भी ऊष्मा संवेदी अंग होते हैं। इसकी खाल के लिए इसका शिकार होता है और इसे भारतीय वन्यजीव अधिनियम (1972) की प्रथम अधिसूची (Schedule I) में रखा गया है।

5. शरीर संरचना, व्यवहार व आहार

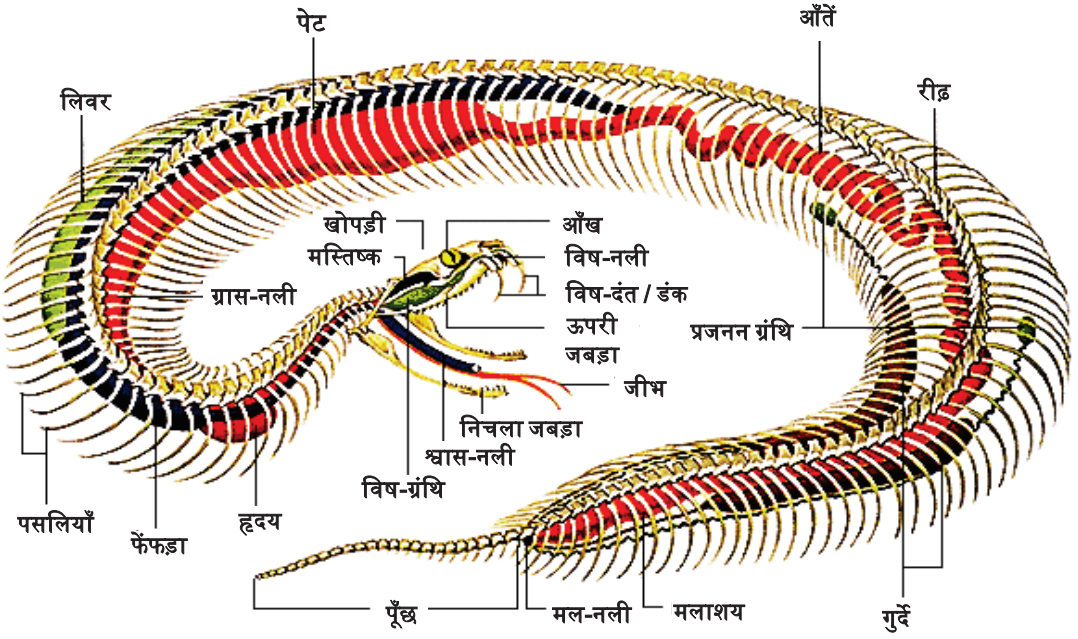

कंकाल और अंग

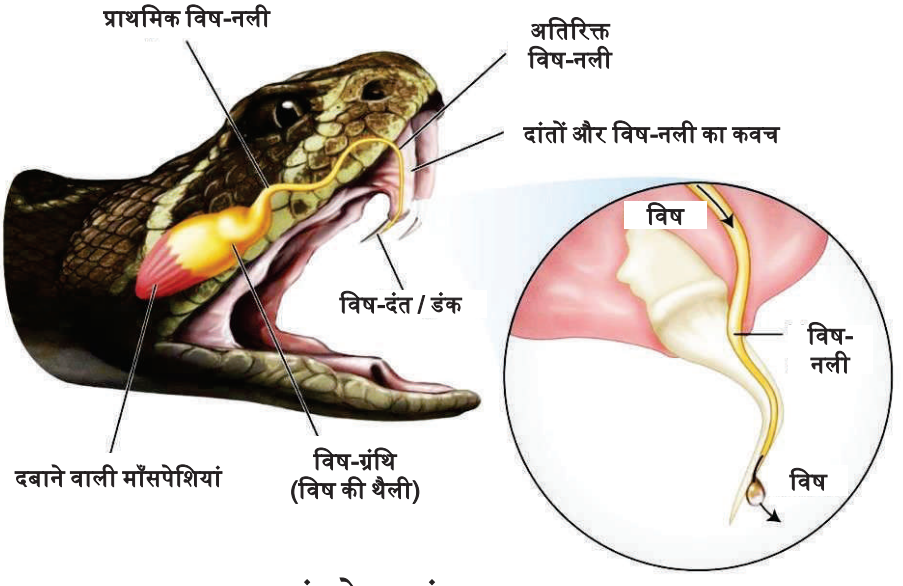

डंसने का तंत्र

साँप जीभ निकालकर शिकार और शत्रु यानी ख़तरे की जाँच-पड़ताल करता है।

इस क्रिया को देखकर ही एक मिथक जन्मा कि साँप हवा खाता है।

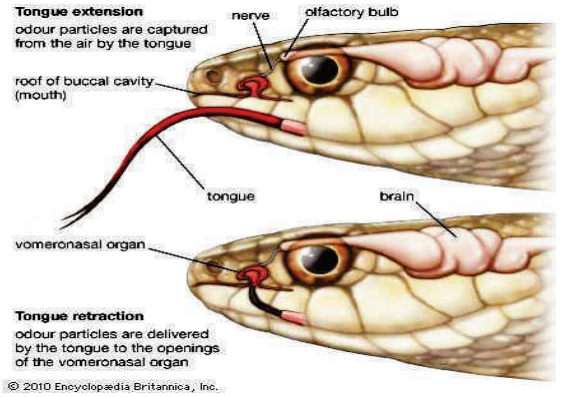

चित्र – एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका

कुछ अन्य बातें

- साँप के बाहरी कान नहीं होते। वह सुनने की जगह कंपन (vibrations) को महसूस कर अपनी प्रतिक्रिया देता है। सपेरे की बीन की धुन सुनकर नहीं बल्कि बीन की आवाज़ के कंपन महसूस कर साँप अपनी प्रतिक्रिया देता है जो देखने में हमें नृत्य जैसा दिखाई देता है।
- इसके आकार के अनुसार आहार में भी विविधता होती है। छोटे और मध्यम आकार के साँप चूहे, चिड़िया, उनके अंडे, मेंढक, छिपकलियाँ व अन्य साँप खाते हैं, जबकि अजगर हिरण जैसे बड़े प्राणियों का शिकार भी करता है।
- नैसर्गिक रूप से साँप का जीवन-काल 2 से 8 वर्ष होता है, किन्तु पालतू साँप 15 से 30 वर्ष भी जी जाते हैं।[12]
- साँप छुपकर रहने वाला एक बहुत मायावी प्रकृति का, शर्मीले स्वभाव का प्राणी है। इसीलिए यह सामान्यतः आसानी से नज़र नहीं आता है।
- चूँकि साँपों के पास ज़मीन खोदने के लिए पैर आदि नहीं होते तो अधिकाँश साँप खुद का बिल नहीं बना पाते बल्कि चूहों के बिल, पेड़ों के कोटर, पत्थरों-चट्टानों के बीच, इत्यादि स्थानों में छुपते हैं। बंद पड़े मकान, खंडहर अथवा निर्माणाधीन भवन भी इन्हें छुपने के स्थान मालूम पड़ते हैं। अज्ञानवश दीमकों के टीलानुमा घरों को 'साँप की बांबी' कहा जाता है। कुछ ही साँप अपना बिल बना पाते हैं जिन्हें 'फॉसोरिअल स्नेक (Fossorial Snake)' कहा जाता है।
- अंडे देनेवाले प्राणियों को ओविपेरस (Oviparous) कहा जाता है जबकि अंडों के बिना ही अपने शरीर से बच्चों को जन्म देने वाले प्राणियों को विविपेरस (Viviparous) कहा जाता है। कुछ साँप, जैसे अजगर, वाइपर, इत्यादि सीधे बच्चों को जन्म देते हैं। चूँकि अजगर, वाइपर, इत्यादि कुछ साँपों के अंडे उनके शरीर में ही फूटते हैं और सीधे बच्चे शरीर से बाहर निकलते हैं, इन्हें 'ओवोविविपेरस (Ovoviviparous) कहा जाता है।

6. महत्त्व

प्राकृतिक महत्त्व

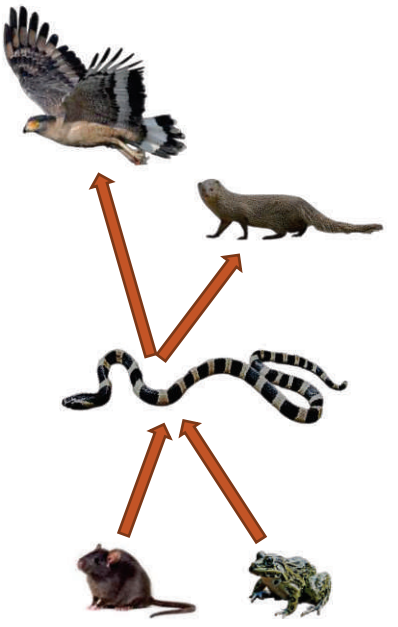

- साँप अपने आहार की विविधता के कारण कई प्रजातियों, विशेषतः चूहों, मेंढकों और पक्षियों को खाकर उनकी आबादी पर नियंत्रण रखता है, उन्हें बेतहाशा बढ़ने से रोकता है। यह प्रकृति का सुंदर नियम है।
- इसके अलावा साँप स्वयं भी कई बड़े पक्षियों और माध्यम आकर के पशुओं का आहार होता है, जैसे गरुड़, नेवले, इत्यादि।
- कुछ प्रजातियाँ तो मुख्य रूप से साँपों को ही खाती हैं, जैसे सर्पभक्षी गरुड़ समूह की सभी प्रजातियाँ, जिन्हें अंग्रेज़ी में 'सर्पेंट-ईगल' कहा जाता है। साँप और नेवले की दुश्मनी पर तो कई किस्से-कहानियाँ प्रचलित हैं।
- इसीलिए आहार के लिए मुख्यतः साँपों पर निर्भर प्रजातियों के अस्तित्त्व के लिए साँपों का होना ज़रूरी है।
- साँप अपनी उम्र के अनुसार अपनी पुरानी खाल (केंचुली) साल में 3-6 बार छोड़ते हैं।[4, 11] यह छोड़ी हुई खाल भी कई कीड़े-मकौड़ों व सूक्ष्मजीवों का आहार होती है।
- इस प्रकार पारिस्थितिकी तंत्र (ईकोसिस्टम) में साँप एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण, बल्कि अपरिहार्य भूमिका निभाता है।

आर्थिक महत्त्व

- एक शोध के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष 24 लाख टन से 260 लाख टन खाद्यान्न चूहे खा जाते हैं। यह आंकड़ा केवल खाद्यान्न का है। खड़ी फ़सल का नुकसान इसके अतिरिक्त है।[3]
- जब साँपों के होते हुए यह स्थिति है, तो उनकी विलुप्ति से यह खाद्यान्न संकट कितना बढ़ सकता है इसकी कल्पना कीजिए। किसानों को इसका ख्याल रखना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।
- इन चूहों को खाकर साँप लाखों टन खाद्यान्न और अन्य कृषि उत्पाद बर्बाद होने से और किसानों को भारी आर्थिक नुकसान से बचा लेते हैं, जिसके कारण इन्हें 'किसानों का मित्र' कहा जाता है।
- कई राज्य सरकारें सर्पदंश से होने वाली मौतों के बदले आर्थिक मुआवज़ा देती हैं। मध्य प्रदेश में यह रकम प्रति व्यक्ति चार लाख रुपये है जो राजस्व विभाग देता है।

औषधिक महत्त्व

- सर्पदंश का इलाज या प्रतिरोध केवल साँप के विष से बने प्रतिकारक अर्थात 'एंटी-वेनम' से ही संभव है। एंटी-वेनम से दुनिया भर में प्रतिवर्ष हज़ारों सर्पदंश पीड़ितों की जान बचाई जाती है।
- चूँकि साँपों के विष का गुण व प्रभाव प्रजाति व भौगौलिक स्थिति के अनुसार बदल जाता है, इसीलिए एक क्षेत्र का एंटी-वेनम किसी दूर के दूसरे क्षेत्र में उपयोगी हो ऐसा आवश्यक नहीं है।
- कैंसर/ एड्स और कई अन्य लाइलाज बीमारियों के उपचार में सर्पविष के उपयोग पर वैश्विक स्तर पर शोध चल रहे हैं।

7. साँप निकलने की स्थिति में सावधानियाँ

- साँप को किसी भी स्थिति में छेड़ने का प्रयास न करें और न ही उसके समीप जाएँ।
- पूरी तरह से शांति बनाए रखें और आस-पास भीड़ न बनाएँ और न ही लकड़ी आदि से उसे छेड़ें।
- स्वयं साँप पकड़ने का प्रयास न करें क्योंकि ज़रा सी ग़लती जानलेवा हो सकती है।
- एक व्यक्ति दूर से साँप पर नज़र रखे और कोई दूसरा व्यक्ति सर्प-विशेषज्ञ से संपर्क करे।
- सर्प विशेषज्ञ को साँप के विषय में समुचित जानकारी उपलब्ध कराएँ, जैसे साँप का रंग, उसकी लंबाई, छिपने का स्थान, इत्यादि।
- साँप के छुपने के स्थान पर पानी ,पेट्रोल एवं अन्य रासायनिक पदार्थ न छिड़कें।

8. सर्पदंश की स्थिति में उपाय

- पीड़ित को शांत रखने का प्रयास करें, उत्तेजित न होने दें तथा उसे विश्वास दिलाएँ कि समस्या सामान्य है और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसका सफल उपचार उपलब्ध है।
- उसे खाने को कुछ न दें।
- दंशित स्थान को साबुन और साफ़ पानी से धोएँ एवं उसपर किसी भी प्रकार की कोई दवाई न लगाएँ।
- नीम-हकीमों व तांत्रिकों से दूर रहें।
- याद रखें विषैले सर्पदंश का एकमात्र इलाज AVS (Anti Snake Venom Serum) है। सर्पदंश की स्थिति में समय ही जीवन की कुंजी है। अतः पीड़ित व्यक्ति को यथाशीघ्र नजदीकी अस्पताल लेकर जाएँ।

9. मिथक, भ्रांतियाँ और अंधविश्वास

साँपों के प्रति भय और श्रद्धा का विरोधाभासी मिश्रण सदियों पुरानी किंवदंतियों, भ्रांतियों, मिथकों और कपोल-कल्पित कहानियों-कविताओं की देन है। दुर्भाग्यवश सैटेलाईट और कंप्यूटर के अत्याधुनिक युग में भी इन अंधविश्वासों का चलचित्रों के माध्यम से भरसक बेरोकटोक प्रचार होता है। अज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के अभाव में ग्रामीण क्षेत्रों में यह अधिक प्रबल होते हैं।

साँपों का दूध पीना, उसका हवा खाना, उसका सपेरे की बीन की धुन पर नाचना, इत्यादि कुछ अंधविश्वासों का हम इस पुस्तिका में पहले ही तर्कों के साथ खंडन कर चुके हैं।

नागों (कोबरा) से जुड़े अंधविश्वास

नागमणि: इस मिथक के अनुसार 100 वर्ष तक जी लेने के बाद नाग के पास 'नागमणि' आ जाता है, जबकि साँप का जीवन-काल ही मात्र 10 से 30 वर्ष होता है।

इच्छाधारी नाग: यह कवियों की कल्पनामात्र है। संभवतः इसी कारण हिंदुओं में मनुष्य के अलावा केवल नाग को ही चिताग्नि देने की प्रथा है।

नागिन का बदला: मिथक है कि किसी नाग या नागिन को मार डालने पर उसका जोड़ीदार बदला लेने आता है। यह मिथक एक तथ्य पर आधारित है कि प्रजनन काल में किसी साँप को मारने पर उसकी फेरोमौन ग्रंथि फटने से उस स्थान पर फेरोमौन फ़ैल जाता है और विपरीत लिंग के साँप प्रजनन की आस में आकर्षित होकर वहीं आते हैं।

अन्य मिथक और भ्रांतियाँ

- **ऐसी धारणा है कि विषैले साँपों के बच्चों में विष नहीं होता। सत्य यह है कि विषैले साँपों के बच्चे जन्मजात विषैले होते हैं, अपितु उनका दंश वयस्क विषैले साँपों से अधिक घातक होता है क्योंकि उनका अपने विष निष्कासन पर नियंत्रण नहीं होता और वे अपना अधिकांश विष दंश के समय ही निकाल देते हैं।**
- **ग्रामीण क्षेत्रों यह अवैज्ञानिक धारणा प्रचलित है कि माटी के साँप (Common Sand Boa) को छू लेने से या सुआपंखी साँप (Green Vine Snake) की छाया पड़ने से कुष्ठ रोग (Leprosy) हो जाता है। यह ग़लत जानकारी है।**
- **कुछ जगह यह धारणा भी प्रचलित है कि घोड़ा-पछाड़ जिसे कहीं-कहीं असढीया भी कहते है उसमे अषाढ़ माह में विष आ जाता है। ज़रा सोचिए, एक विषहीन साँप में विष कहाँ से आएगा?**

10. साँपों पर हो रहे अत्याचार

- साँप चाहे विषैला हो या विषहीन, लोग उन्हें मौक़ा देखते ही मार देते हैं। लाखों साँप अकारण ही मारे जाते हैं।
- नागपंचमी के दिन सपेरे नाग को दूध पिलाते हैं। वह उसका मुँह ज़बरदस्ती दूध से भरी कटोरी में डुबाते हैं और कई बार साँप छटपहाट में कुछ दूध निगल लेता है जो उनके पेट में न जाकर उनकी श्वास-नली में जमा हो जाता है। इससे वह मर जाता है।
- सपेरे कभी साँप के दाँत तोड़कर, कभी उसकी विष की थैली निकालकर तो कभी उसका मुँह सीकर उसे तड़पाते हैं। रही सही कसर हल्दी, कुमकुम, रोली, इत्यादि से हम लोग पूरी कर देते हैं। वैसे अब यह प्रथा कम होती जा रही है जो स्वागत योग्य है।
- सपेरे साँपों को पकड़कर उन्हें उनके प्राकृतिक आवास से दूर कर देते हैं। यह किसी व्यक्ति को जबरन घर से उठाकर जेल में डाल देने जैसा है। नाग और तथाकथित 'दोमुँहे साँप' इस समस्या के सबसे बड़े शिकार हैं।
- साँपों को पालने हेतु उनका अवैध और अमानवीय रूप से व्यापार भी होता है।
- सुंदर चमड़े के लिए बड़े साँपों और अजगरों का बड़ी बेरहमी से अवैध शिकार होता है। साँपों के असली-नकली चमड़े के बैग, जैकेट, जूते, इत्यादि बाज़ार में देखने को मिलते हैं।

11. संरक्षण के कुछ उल्लेखनीय प्रयास

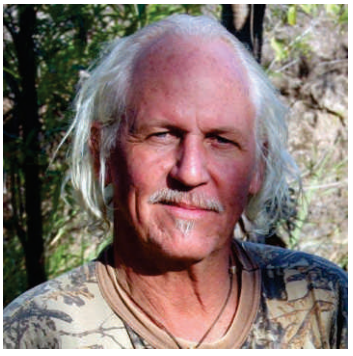

पद्मश्री रोम्युलस व्हिटेकर – अमरीका में जन्मे व्हिटेकर 1970 के दशक में भारत आकर बसे और आज भी साँपों के संरक्षण और शोधकार्य के क्षेत्र में बेहद सक्रीय हैं। आप भारत के सबसे विख्यात सर्प-विशेषज्ञ हैं। आपने सरीसृप संरक्षण के लिए कई संस्थाओं की स्थापना की जैसे साँपों के लिए चेन्नई स्नेक पार्क ट्रस्ट (1970), मगरमच्छों के लिए मद्रास क्रोकोडाइल बैंक ट्रस्ट (1976), किंग कोबरा के लिए अगुम्बे रेन-फॉरेस्ट रीसर्च स्टेशन (2005), इत्यादि।

डॉ.मधुरिता गुप्ता (नवी मुंबई, महाराष्ट्र) - स्नेक कंज़र्वेशन ट्रस्ट की अध्यक्षा डॉ.मधुरिमा गुप्ता ने महिला सर्प-मित्रों और सर्प विशेषज्ञों का एक संगठन बनाया है।

इनके अलावा स्नेक श्याम (मैसूर, कर्नाटक), वावा सुरेश (तिरुवनंतपुरम, केरल), विवेक शर्मा (जबलपुर, मध्य प्रदेश) व कुछ अन्य सर्प-मित्र भी क्षेत्रीय स्तर पर सर्प-संरक्षण और शोधकार्य के द्वारा काफ़ी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

12. संरक्षण में योगदान कैसे दें?

- साँपों को मारने की जगह जबकि उनसे सावधान रहें व उन्हें उनके प्राकृतिक आवास में वापस छोड़ दें या अपने आप जाने दें।
- चमड़े की वस्तुओं का त्याग करें। क्या पता किस निरीह प्राणी की हत्या से यह प्राप्त हुआ है।
- सपेरों अथवा अवैध व्यापारियों की सूचना मिलते ही वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो (Wildlife Crime Control Bureau) अथवा पेटा (PETA), पी.ऍफ़.ए. (PFA) या पशु-संरक्षण में संलग्न किसी एनजीओ से संपर्क करें।
- स्वयं जागरूक हों और अपने परिजनों परिचितों को भी जागरूक करें।

संदर्भ स्रोत

01 The Hindu - November 05 2022, 'Over 64,000 people in India die of snakebites each year' by Soumyadeep Bhaumik, Weblink - thehindu.com/sci-tech/over-64000-people-in-india-die-of-snakebites-each-year/article66096730.ece

02 Snakes of the World: A Guide to Every Family by Mark O'Shea, Princeton University Press (US)

03 Indian grain storage management & research institute (IGMRI), Hapur(U.P), Weblink - igmri.dfpd.gov.in/igmri/rodent-pests

04 'Molt', A-Z Animals, Weblink - a-z-animals.com/reference/molt

05 'The origin of snakes' by J.F.Durand, Geoscience Africa (University of Witwatersrand, Johannesburg, South Africa), Vol. Abstract, p. 187

06 'Snakes evolved from burrowing ancestor, new data suggest' by Meghan Rosen, November 27 2015 Weblink - sciencenews.org/article/snakes-evolved-burrowing-ancestor-new-data-suggest

07 The Reptile Database, Weblink - reptile-database.org

08 'What's the smallest snake in the world?', Discover Wildlife (BBC Wildlife Magazine), Weblink - discoverwildlife.com/animal-facts/reptiles/smallest-snake-in-the-world/

09 Natural History Museum (London), Weblink - nhm.ac.uk/discover/what-is-the-biggest-snake-in-the-world.html

10 "Ophiophagus hannah". IUCN Red List of Threatened Species, Weblink - iucnredlist.org/species/177540/1491874

11 'How often do snakes shed?', Weblink - A-Z Animals, a-z-animals.com/blog/how-often-do-snakes-shed

12 'How Long Do Snakes Live?', Weblink - A-Z Animals, a-z-animals.com/blog/how-long-do-snakes-live

यदि मानव वन-क्षेत्रों में घुसपैठ कर बसाहटें विकसित न करे और थोड़ी-बहुत सावधानी बरते तो साँप और मानव के आपसी संघर्ष में कमी आएगी और आपसी टकराव उतना घातक नहीं होगा जितना वर्त्तमान में है।

The NATURE VOLUNTEERS
An Informal Pressure Group of Environmentally Restless People

The Nature Volunteers®, Indore

अध्यक्ष: पद्मश्री भालू मोंढे सचिव: देव कुमार वासुदेवन

कार्यालय: 3/2, न्यू पलासिया, इंदौर (म.प्र.)

वेबसाईट: www.tnvindia.org

ईमेल: volunteersnature@gmail.com